

कुओं को जहर देना: ज़ायनवादी जैविक युद्ध, अंतरराष्ट्रीय कानून, और औपनिवेशिक हिंसा की निरंतरता

आधुनिक इज़राइल की पौराणिक कथा में, 1948 की घटनाओं को अक्सर जीवित रहने के युद्ध के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, एक राष्ट्रीय जन्म का क्षण जो अस्तित्वगत खतरे के बीच हुआ। लेकिन इस कथन के नीचे युद्ध अपराधों का एक गहरा, अच्छी तरह से प्रलेखित इतिहास छिपा है - जिसमें फ़िलिस्तीनी कुओं और जल आपूर्ति को जानबूझकर जहर देना शामिल है। ये कृत्य अलग-थलग गलतियाँ नहीं थीं, बल्कि जनसंख्या हटाने, निवारण, और क्षेत्रीय सुदृढ़ीकरण की व्यापक रणनीति का हिस्सा थीं - जो आज कब्जे वाले वेस्ट बैंक में जल अवसंरचना के विनाश और गाजा की पूर्ण नाकाबंदी के माध्यम से जारी है।

जल स्रोतों को जहर देना, विशेष रूप से जैविक एजेंटों के साथ, केवल एक युद्ध रणनीति नहीं है। यह अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत एक युद्ध अपराध है, सामूहिक पीड़ा का हथियार, और मानवीय गरिमा के खिलाफ अपराध है। 1948 में, ये कृत्य **हैग कन्वेंशन IV (1907)** के तहत पहले से ही अवैध थे - जिसके लिए इज़राइल, दायित्व की निरंतरता और बाद में स्वीकृति के कारण, बाध्य है। यह निबंध ज़ायनवादी जल विषाक्तता अभियानों के प्रलेखित इतिहास, उनके कानूनी निहितार्थ, और नकबा से लेकर वर्तमान तक इस रणनीति की निरंतरता को प्रस्तुत करता है।

1948 में जैविक युद्ध: नीति के रूप में विषाक्तता

अक्का (मई 1948): पानी में टाइफॉइड

मई 1948 में, जब ज़ायनवादी ताकतों ने फ़िलिस्तीनी शहर **अक्का** पर घेराबंदी की, हगाना के गुप्त **साइंस कोर (हेमेद बेट)** ने शहर की जल आपूर्ति में टाइफॉइड आधारित जैविक एजेंट का उपयोग किया। इसका लक्ष्य नागरिक आबादी को कमजोर करना, दहशत पैदा करना, और पलायन को तेज करना था।

- **तरीका:** प्रयोगशालाओं में उगाए गए टाइफॉइड बैक्टीरिया को नगरपालिका जल प्रणाली में डाला गया
- **प्रभाव:** दर्जनों नागरिक टाइफॉइड से बीमार पड़ गए। रेड क्रॉस ने हस्तक्षेप किया
- **अपराधी:** यूनिट 131, हगाना नेतृत्व के अधिकार के तहत
- **प्रलेखन:** इज़राइली सैन्य अभिलेखागार, रेड क्रॉस रिकॉर्ड, और इज़राइली इतिहासकार जैसे बेनी मॉरिस, एवनेर कोहेन, और थॉमस सेगेव ने इस ऑपरेशन की पुष्टि की

यह युद्ध के दौरान ज़ायनवादी ताकतों द्वारा बैक्टीरियोलॉजिकल हथियारों का पहला ज्ञात उपयोग था। यह कोई स्वतंत्र ऑपरेशनों का कृत्य नहीं था, बल्कि नागरिकों को निशाना बनाने वाला एक नियोजित सैन्य अभियान था।

गाजा (जून 1948): एक नाकाम जैवआतंकवादी साजिश

अक्का के तुरंत बाद, उसी यूनिट ने **गाजा** में, जो तब मिस्र प्रशासन के अधीन था, एक समान टाइफॉइड विषाक्तता अभियान चलाने की कोशिश की। इस बार, मिस्र की सुरक्षा ताकतों ने रोगजनक को तैनात करने से पहले ऑपरेशनों को गिरफ्तार कर लिया।

- **उद्देश्य:** गाजा को अस्थिर करना, अरब सुदृढ़ीकरण को रोकना, और ज़ायनवादी पहुंच का संकेत देना
- **खोज:** मिस्र के अधिकारियों ने बैक्टीरियल एजेंटों को जब्त किया और एजेंटों को गिरफ्तार किया
- **प्रलेखन:** थॉमस सेगेव, **1949: द फर्स्ट इज़राइलिस**, और मिस्र की सुरक्षा रिपोर्ट

हालांकि यह हमला विफल रहा, यह कई मोर्चों पर समन्वित जैविक युद्ध रणनीतियों के स्पष्ट पैटर्न को दर्शाता है।

बिहू और बेत सुरिक (वसंत 1948): गाँव के कुओं को दूषित करना

नकबा से पहले, यरुशलम के उत्तर-पश्चिम में फ़िलिस्तीनी गाँवों - जैसे **बिदू** और **बेत सुरिक** - ने ज़ायनवादी ताकतों द्वारा स्थानीय कुओं को जहर देने या तोड़फोड़ करने की कोशिशों की सूचना दी। ये गाँव यरुशलम के आपूर्ति मार्गों पर रणनीतिक रूप से स्थित थे।

- **सबूत:** वालिद खालिदी द्वारा एकत्र की गई मौखिक गवाहियाँ और स्थानीय फ़िलिस्तीनी रिकॉर्ड
- **इरादा:** स्थानीय संसाधनों को अनुपयोगी बनाकर जनसंख्या हटाना या वापसी को रोकना
- **परिणाम:** गाँव अंततः खाली हो गए; निवासी भाग गए या निष्कासित किए गए

हालांकि सूक्ष्मजीवविज्ञानी सबूत कभी बरामद नहीं हुए (संभवतः समय और विनाश के कारण), यह पैटर्न ग्रामीण क्षेत्रों में ज़ायनवादी तोड़फोड़ के ज्ञात परिचालन प्रोफाइल से मेल खाता है।

ऐन करीम (1948): जलाशय की तोड़फोड़ के बाद सामूहिक बीमारी

यरुशलम के पश्चिम में स्थित **ऐन करीम** में, हगाना के छापों ने गाँव के जलाशय को निशाना बनाया, जिसके बाद अचानक बीमारी का प्रकोप हुआ।

- **विवरण:** छापे के कुछ दिनों बाद निवासी बीमार पड़ गए; लक्षणों ने दूषितता का संकेत दिया
- **अपुष्ट:** कोई रोगजनक आधिकारिक रूप से पहचाना नहीं गया, लेकिन सामूहिक बीमारी की व्यापक रूप से सूचना दी गई
- **स्रोत:** फ़िलिस्तीनी रेड क्रिसेंट, बचे हुए लोगों की गवाहियाँ

यह घटना दर्शाती है कि मनोवैज्ञानिक और जैविक रणनीतियों का उपयोग एक साथ किया गया, न केवल नुकसान पहुँचाने के लिए बल्कि भय बोलने और पलायन को प्रोत्साहित करने के लिए।

ऐन अल-ज़ैतून (अप्रैल-मई 1948): जल अवसंरचना का विनाश

गैलिली में, पामाच ने **ऐन अल-ज़ैतून** पर हमला किया, कई निवासियों को मार डाला और बाकियों को निष्कासित कर दिया। इसके बाद, ज़ायनवादी ताकतों ने गाँव के कुओं और जल नालियों को नष्ट कर दिया ताकि कोई वापसी न हो।

- **रणनीति:** तीव्र विनाश - जैविक नहीं, लेकिन दीर्घकालिक विस्थापन के लिए समान रूप से लक्षित
- **स्रोत:** इलान पप्पे, **द एथनिक क्लीनसिंग ऑफ़ पालेस्टाइन**

जल स्रोतों का विनाश केवल आकस्मिक क्षति नहीं था। यह गाँवों को स्थायी रूप से खाली करने की एक सोची-समझी रणनीति थी।

वृहद गैलिली: झरनों को जहर देने की योजना

आईडीएफ के गैर-वर्गीकृत रिकॉर्ड दिखाते हैं कि ज़ायनवादी ताकतों ने गैलिली के कई गाँवों में जल स्रोतों को जहर देने या अक्षम करने की योजना बनाई, विशेष रूप से युद्धविराम रेखाओं के पास।

- **लक्ष्य:** निष्कासित फ़िलिस्तीनियों की पुनः घुसपैठ को रोकना
- **साधन:** जल बिंदुओं का विनाश या नियोजित दूषितता
- **स्रोत:** इज़राइली सैन्य अभिलेखागार, नूर मसाल्हा और सलमान अबू सित्ता के कार्यों में उद्धृत

ये योजनाएँ दिखाती हैं कि जल विषाक्तता एक व्यापक सिद्धांत ("प्लान दालेत") का हिस्सा थी, जो एक या दो अलग-थलग घटनाओं तक सीमित नहीं थी।

कानूनी निहितार्थ: अंतरराष्ट्रीय कानून का बहुविध उल्लंघन

ऊपर वर्णित कृत्य 1948 के युद्ध के समय प्रभावी अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून का स्पष्ट और बहुविध उल्लंघन हैं:

हैग कन्वेंशन IV (1907) - स्वीकृत और प्रभावी

- **अनुच्छेद 23(a):** “जहर या जहरीले हथियारों का उपयोग” निषिद्ध करता है
- ज़ायनवादी जैविक हमले (अक्का, गाजा) इस अनुच्छेद का प्रत्यक्ष उल्लंघन करते हैं

प्रथागत अंतरराष्ट्रीय कानून

- जल स्रोतों को जहर देना और नागरिकों को निशाना बनाना प्रथागत कानून का हिस्सा है, जो संधि स्वीकृति की परवाह किए बिना बाध्यकारी है
- ये हमले समकालीन मानकों के तहत युद्ध अपराध के दायरे में आते हैं

जैविक हथियार कन्वेंशन (BWC, 1972) - इज़राइल ने हस्ताक्षर किया लेकिन स्वीकृत नहीं किया

- जैविक हथियारों के विकास, उत्पादन, और उपयोग को निषिद्ध करता है
- हालाँकि BWC नकबा के बाद आया, टाइफॉइड को हथियार के रूप में उपयोग करना जेनेवा प्रोटोकॉल (1925) के तहत पहले से ही निंदनीय था - जिस पर इज़राइल ने हस्ताक्षर नहीं किए, लेकिन जो व्यापक कानूनी मानदंडों को दर्शाता है

रोम संविधान ICC (1998) - इज़राइल ने हस्ताक्षर नहीं किया, लेकिन OPT पर लागू

- पानी के माध्यम से नागरिकों को जहर देना **अनुच्छेद 8(2)(b)(xvii)** के तहत युद्ध अपराध के रूप में योग्य है
- ICC ने कब्जे वाले फ़िलिस्तीनी क्षेत्रों पर अपनी अधिकारिता को मान्यता दी है

रणनीतियों की निरंतरता: कुओं से घेराबंदी तक

जल का हथियारीकरण 1948 में समाप्त नहीं हुआ। यह विकसित हुआ, और इज़राइल के कब्जे की अवसंरचना का एक केंद्रीय विशेषता बन गया।

वेस्ट बैंक: जल अवसंरचना के खिलाफ़ उपनिवेशी हिंसा

कब्जे वाले वेस्ट बैंक में इज़राइली उपनिवेशी नियमित रूप से फ़िलिस्तीनी जल टैंकों, कुओं, और सिंचाई प्रणालियों को नष्ट या दूषित करते हैं।

- **तरीके:** टैंकों पर गोलीबारी, पाइप तोड़ना, पशुओं के पानी के बिंदुओं को जहर देना
- **प्रेरणा:** क्षेत्र C में विशेष रूप से, असहनीय परिस्थितियों के माध्यम से विस्थापन
- **संरक्षण:** अक्सर IDF की निगरानी में या निष्क्रिय सहमति के साथ होता है
- **प्रलेखन:** UN OCHA, B'Tselem, Amnesty International

जल की अस्वीकृति उपनिवेशी विस्तार की एक मुख्य रणनीति बन गई है, जो 1948 में उपयोग की गई उसी तर्क को अपनाती है: जीवन को काटकर भूमि पर नियंत्रण करना।

गाजा: पर्यावरणीय और जैविक युद्ध के रूप में घेराबंदी

गाजा में, इज़राइल ने 2007 से एक पूर्ण नाकाबंदी लागू की है - जो न केवल सीमाओं और बिजली को, बल्कि जल शुद्धिकरण, स्वच्छता, और चिकित्सा अवसंरचना को भी निशाना बनाती है।

- **कार्रवाईयाँ:**
 - सीवेज उपचार संयंत्रों और विलवणीकरण सुविधाओं पर बमबारी
 - जल प्रणालियों की मरम्मत के लिए आवश्यक सामग्रियों को रोकना

- जल पंपों को चलाने के लिए आवश्यक ईंधन को रोकना

- **प्रभाव:**

- गाजा का 97% से अधिक पानी पीने योग्य नहीं है (WHO)
- बच्चे पुरानी जलजनित बीमारियों से पीड़ित हैं
- 2021 में, संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों ने गाजा को “अनुपयोगी” घोषित किया

नाकाबंदी पानी को - जो जीवन के लिए आवश्यक है - सजा के हथियार में बदल देती है। यह 1948 के जहर दिए गए कुओं में पहली बार तैनात सिद्धांत की आधुनिक निरंतरता है।

नैतिक स्पष्टता: तथ्य नफरत नहीं है

यह सच है कि “कुओं जहर देने” का आरोप कभी एक दुर्भावनापूर्ण यहूदी-विरोधी बदनामी थी, जिसका उपयोग मध्ययुगीन यूरोप में निर्दोष यहूदियों की हत्या को उचित ठहराने के लिए किया गया था। लेकिन ज़ायनवादी ताकतों द्वारा फ़िलिस्तीनी पानी को जहर देने के वास्तविक, प्रलेखित मामलों को स्वीकार करना उस बदनामी को पुनर्जनन करना नहीं है। यह ऐतिहासिक और कानूनी वास्तविकता के प्रति सच बोलना है।

इज़राइली सैन्य और उपनिवेशी रणनीतियों की आलोचना - जिसमें जैविक युद्ध शामिल है - यहूदी-विरोधी नहीं है। यह अंतरराष्ट्रीय कानून, ऐतिहासिक जवाबदेही, और फ़िलिस्तीनी पीड़ितों के जीवित अनुभव में निहित एक नैतिक दायित्व है। ऐसे अपराधों के सामने चुप्पी यहूदियों की रक्षा नहीं करती - यह युद्ध अपराधियों को संरक्षण देती है और इतिहास भर में वास्तविक यहूदी-विरोधी के पीड़ितों को अपमानित करती है।

निष्कर्ष: हथियार के रूप में पानी, प्रतिरोध के रूप में स्मृति

अक्का से गाजा तक, तोड़फोड़ किए गए गाँव के कुओं से लेकर गाजा के जलभृतों की धीमी गला घोटने तक, पानी को हथियार के रूप में उपयोग करना ज़ायनवादी उपनिवेशी-औपनिवेशिक तर्क को परिभाषित करता है। यह हटाने, निवारण, और प्रभुत्व की रणनीति है - और यह कभी रुकी नहीं।

पानी को जहर देना जीवन को जहर देना है। और फ़िलिस्तीन के जहर दिए गए कुओं को याद करना प्राचीन बदनामियों को उकसाना नहीं है, बल्कि आधुनिक अपराधों का सामना करना है - सत्य के साथ, कानून के साथ, और इस माँग के साथ कि पानी, और न्याय, फिर से स्वतंत्र रूप से बहें।